सूरह – एक कहानी

सूरह अल-मुजादिला

झगड़ने वाली औरत

पूरा सफ़र – एक औरत की फ़रियाद से अल्लाह की जमाअत तक –
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 58 • 22 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

क़द समि'अल्-लाहु क़ौलल्-लती तुजादिलुक फ़ी ज़ौजिहा व तश्तकी इलल्-लाह

1. अल्लाह ने उस औरत की बात सुन ली जो अपने शौहर के बारे में तुम से झगड़ रही थी और अल्लाह से फ़रियाद कर रही थी।

मा यकूनु मिन नज्वा सलासतिन इल्ला हुव राबि'उहुम

7. तीन की कोई सर-गोशी नहीं होती मगर वो उनका चौथा होता है।

यर्फ़'इल्-लाहुल्-लज़ीन आमनू मिन्कुम वल्लज़ीन ऊतुल्-'इल्म दरजात

11. अल्लाह तुम में से ईमान वालों को और इल्म वालों को दर्जों में बुलंद करता है।

कतबल्-लाहु ल-अग़्लिबन्न अना व रुसुली

21. अल्लाह ने लिख दिया है: मैं और मेरे रसूल ज़रूर ग़ालिब रहेंगे।

उलाइक हिज़्बुल्-लाह

22. यही अल्लाह की जमाअत है।

अला इन्न हिज़्बल्-लाहि हुमुल्-मुफ़्लिहून

22. सुनो! अल्लाह की जमाअत ही कामयाब है।

ग़ुस्से में कहा गया एक जुमला

बेटा, आज की कहानी मदीना के एक छोटे घर में शुरू होती है, ग़ुस्से में कहे गए एक जुमले के साथ — और सात आसमानों के ऊपर ख़त्म होती है। इसके सफ़र से सीखिए कि **एक मज़लूम आवाज़ कितनी बुलंद तक जा सकती है।**

ख़ौला बिन्ते सा'लबा (रज़ि0) अपने शौहर औस इब्ने अस-सामित के साथ बूढ़ी हो चुकी थीं — सालों की शादी, बच्चे पाले, जवानी उनकी ख़िदमत में गुज़ारी। एक दिन, ग़ुस्से के एक झोंके में, औस ने जाहिलियत के दौर का जुमला कह दिया — **ज़िहार**: 'तू मेरे लिए मेरी माँ की पीठ जैसी है।'

समझिए उन अल्फ़ाज़ ने उस मुआशरे में क्या किया, बेटा। **ज़िहार तलाक़ से ज़्यादा ज़ालिम था।** तलाक़ कम अज़ कम एक औरत को आज़ाद कर देती थी कि अपनी

ज़िंदगी दोबारा बनाए। ज़िहार उसे **लटका** हुआ छोड़ देता था — 'माँ जैसी' क़रार दे कर, तो अब बीवी नहीं रही; मगर तलाक़ भी नहीं दी, तो कभी आज़ाद भी नहीं। **एक दरवाज़ा दोनों तरफ़ से बंद, और चाबी फेंक दी गई** — और औरत अकेली मर्द के ग़ुस्से की क़ीमत चुकाती थी।

उसने बहस की — फिर ऊपर फ़रियाद की

ख़ौला नबी ﷺ के पास आईं और अपना मामला पेश किया — और सूरह का नाम ख़ुद उनकी लगन की इज़्ज़त करता है: **अल-मुजादिला**, वो औरत जो अपने मामले पर **बहस** करती है। उन्होंने कुछ ऐसे अल्फ़ाज़ कहे: या रसूलल्लाह, उसने मेरी जवानी खा ली, और मैंने उसके लिए अपना पेट फैलाया — यहाँ तक कि जब मैं बूढ़ी हो गई और मेरा बच्चे जनना ख़त्म हुआ, तो उसने मुझ पर ज़िहार कह दिया! **मैं कहाँ जाऊँ? मेरे बच्चों का क्या?**

नबी ﷺ सिर्फ़ उस से जवाब दे सकते थे जो उस वक़्त तक नाज़िल हुआ था — और ज़िहार के बारे में अभी कुछ नहीं उतरा था। आपने वो कहा जो जानते थे। मगर ख़ौला, बेटा, उस बंद दरवाज़े पर राज़ी न हुईं। वो फ़रियाद करती रहीं — और फिर उन्होंने वो काम किया जिसे हमेशा के लिए अमर करने के लिए ये सूरह भेजी गई: '**व तश्तकी इलल्लाह**' — उन्होंने अपनी फ़रियाद **ऊपर** मोड़ दी, अल्लाह की तरफ़। वो वहीं खड़ी अपना ग़म आसमान की तरफ़ उठाती रहीं: **या अल्लाह, मैं तुझसे फ़रियाद करती हूँ।**

और उस कमरे से निकलने से पहले, जिब्रील उतर आए। हमारी माँ आइशा (रज़ि0) — जो घर में मौजूद थीं — उम्र-भर हैरत से कहती रहीं: '**मुबारक है वो ज़ात जिसकी समाअत हर चीज़ को घेरे हुए है!** मैं कमरे के एक कोने में थी, और ख़ौला के कुछ अल्फ़ाज़ **मुझ** तक से भी छूट गए — और अल्लाह ने उसे सात आसमानों के ऊपर से सुन लिया।'

पहली आयत गर्मजोशी से उतरी: '**क़द समि'अल्लाह** — अल्लाह ने उस औरत की बात **यक़ीनन सुन ली** जो तुम से अपने शौहर के बारे में झगड़ रही है और अल्लाह

से फ़रियाद कर रही है — और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा है। बेशक अल्लाह **समी', बसीर** — सुनने वाला, देखने वाला है।'

बेटा, इस मंज़र को थाम लीजिए जब आपकी अपनी दुआएँ अनसुनी लगें। **महफ़िल ने उनके अल्फ़ाज़ न सुने; कमरे के कोने ने उनके अल्फ़ाज़ न सुने; अर्श ने न छोड़ा।**

वो क़ानून जिसे एक औरत की फ़रियाद ने दोबारा लिखा

फिर आयतों ने ज़िहार को हमेशा के लिए ढा दिया। अल्लाह ने फ़रमाया: जो लोग ज़िहार कहते हैं — 'उनकी बीवियाँ उनकी **माएँ** नहीं; उनकी माएँ सिर्फ़ वो हैं जिन्होंने उन्हें जना। और बेशक वो **मुनकरम्-मिनल्-क़ौलि व ज़ूरा** — एक बुरी बात, और झूट कहते हैं।' **एक मर्द का ग़ुस्सा हयातियात दोबारा नहीं लिख सकता, बेटा, और एक ज़ुबान का फटना एक इंसान को दोबारा लेबल नहीं कर सकता।**

मगर उस मज़बूती में बुनी हुई रहमत देखिए: वापसी का एक दरवाज़ा खोला गया — एक **क़ीमत** के साथ, और क़ीमत ख़ुद एक सबक़ है। जोड़ी के दोबारा एक दूसरे को छूने से पहले, शौहर को **कफ़्फ़ारा** देना होगा: **एक ग़ुलाम आज़ाद** करे; अगर न कर सके, **लगातार दो महीने रोज़े** रखे; अगर न कर सके, **साठ मोहताजों को खाना** खिलाए।

डिज़ाइन का मुताला कीजिए, बेटा: **ज़ुबान ने गुनाह किया, तो उसका मालिक भुगतेगा — बे-क़ुसूर बीवी नहीं।** और क़ीमत का हर ऑप्शन किसी को **शिफ़ा** देता है: एक ग़ुलाम आज़ाद चलता है, या ग़ुस्से वाले आदमी का अपना नफ़्स साठ दिन की भूक से क़ाबू होता है, या साठ ग़रीब पेट भर जाते हैं। **अल्लाह ग़ुस्से पर टैक्स लगाते हैं — और उस टैक्स को रहमत पर ख़र्च करते हैं।**

और ख़ौला का शरफ़ उस फ़ैसले से भी ज़्यादा ज़िंदा रहा। सालों बाद, जब उमर इब्ने अल-ख़त्ताब (रज़ि0) ख़लीफ़ा थे — वो शख़्स जिसके सामने क़ैसरों के सफ़ीर काँपते थे — ये अब-बूढ़ी औरत उन्हें रास्ते में रोक लेती और उन्हें देर तक नसीहत करती, और वो खड़े सर झुकाए सुनते रहते। जब किसी ने पूछा कि ख़लीफ़ा एक बूढ़ी औरत के

लिए क्यों रुक जाते हैं, उमर ने कहा: '**अल्लाह की क़सम, ये ख़ौला है — वो औरत जिसे अल्लाह ने सात आसमानों के ऊपर से सुना। क्या उमर उसे न सुने?**'

वो हर तीन का चौथा है

फिर सूरह उस सचाई को लेती है जिसे ख़ौला ने जिया — कि अल्लाह हर चीज़ सुनते हैं — और उसे हर उस कमरे में बिठा देती है जिसमें आप कभी बैठेंगे: 'क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह जानते हैं जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है? **तीन** की कोई **नज्वा** — पोशीदा गुफ़्तगू — नहीं होती मगर वो उनका **चौथा** होता है; न **पाँच** की मगर वो उनका **छटा**; न इस से कम, न ज़्यादा, मगर वो उनके **साथ** होता है जहाँ भी वो हों।'

हर मुलाक़ात में एक ग़ैर-दर्ज हाज़िर होता है, बेटा। दफ़्तर की खुसर-पुसर, ख़ानदानी ग्रुप, क्लास के पीछे सरगोशी में बनाया मंसूबा — वो हर गिनती का एक फ़ाज़िल मेंबर है।

अब देखिए सूरह इसे अख़लाक़ में कैसे बदलती है। मुनाफ़िक़ों और कुछ और लोगों ने नज्वा को हथियार बनाया — आपस में 'गुनाह और ज़्यादती और रसूल की ना-फ़रमानी' में सरगोशी करते, जान-बूझ कर मोमिनीन के सामने ताकि उन्हें चुभे। अल्लाह ने सब बे-नक़ाब कर दिया — **सुनने वाला हर खुसर-पुसर में मौजूद था।**

तो मोमिनीन को राज़दारी के आदाब मिले: 'जब तुम पोशीदा बात करो, तो **गुनाह और ज़्यादती और ना-फ़रमानी** में बात **ना** करो — बल्कि **बिर्र और तक़वा** में बात करो — नेकी और ख़ौफ़-ए-ख़ुदा।' और नबी ﷺ ने सोहबत का सुनहरा उसूल बढ़ाया: **जब तुम तीन हो, तो दो आपस में तीसरे को छोड़ कर सरगोशी न करें, क्योंकि ये उसे ग़मगीन करता है।** हमारे राज़ भी, बेटा, अख़लाक़ वाले होने चाहिएँ।

जगह दो — और बुलंद किए जाओ

फिर, ख़ूबसूरती से, वो सूरह जो एक औरत के **सुने जाने** से शुरू हुई उम्मत को सिखाती है कि एक दूसरे के लिए **जगह** कैसे बनाई जाए। 'ऐ ईमान वालो! जब

तुमसे कहा जाए: मजलिसों में जगह बनाओ — तो **जगह बनाओ**; अल्लाह **तुम्हारे लिए** जगह बनाएगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ, तो उठ जाओ।'

बेटा, ये छोटी सी बात नहीं। मस्जिद में सरक कर किसी को बैठने देना, किसी बुज़ुर्ग के लिए उठ खड़ा होना, किसी नए आने वाले के लिए हल्क़ा खोल देना — और अल्लाह का वादा उसी सिक्के में: **जो लोगों के लिए जगह बनाता है, अल्लाह उसके लिए जगह बनाते हैं** — इस दुनिया में, क़ब्र में, और उस दिन।

और फिर वो आयत आती है जिसे हर तालिब-ए-इल्म दिल पर लिखता है: '**यर्फ़'इल्लाहुल्-लज़ीन आमनू मिन्कुम वल्लज़ीन ऊतुल्-'इल्म दरजात** — अल्लाह तुम में से **ईमान वालों** को और **जिन्हें इल्म दिया गया** उन्हें **दर्जों** में बुलंद करता है।'

ग़ौर कीजिए, बेटा, दोनों शर्तें साथ हैं: **ईमान और इल्म।** ईमान बग़ैर इल्म के अंधा जोश है; इल्म बग़ैर ईमान के वही बोझ है जिसका ज़िक्र पिछली सूरह में गधे और किताबों से हुआ। और जब दोनों मिल जाएँ — अल्लाह ख़ुद उठाते हैं, और जिसे वो उठाएँ उसे कोई गिरा नहीं सकता।

फिर एक बहुत दिलचस्प हुक्म आया, बेटा। लोग नबी ﷺ से बार बार ज़ाती, पोशीदा मशवरे के लिए वक़्त माँगते, यहाँ तक कि आप ﷺ का वक़्त बँट जाता। तो हुक्म उतरा: **जो नबी ﷺ से पोशीदा बात करना चाहे, वो पहले एक सदक़ा दे।**

और नतीजा हैरत-अंगेज़ था: सरगोशियाँ रुक गईं। अली (रज़ि0) फ़रमाते हैं: **अल्लाह की किताब में एक आयत ऐसी है जिस पर मेरे सिवा किसी ने अमल नहीं किया** — उन्होंने एक दीनार बेच कर दस दिरहम बनाए, और हर पोशीदा मशवरे से पहले एक दिरहम सदक़ा किया। फिर हुक्म हल्का कर दिया गया।

बेटा, इस इम्तिहान की हिकमत देखिए: **एक छोटे से सदक़े ने ज़ाहिर कर दिया कि किसका सवाल वाक़ई अहम था और किसका सिर्फ़ अपनी अहमियत जताने के लिए था।** माल इंसान की नीयत का सबसे सच्चा तराज़ू है।

अल्लाह की जमाअत

और अब सूरह अपने आख़िरी हिस्से में उन लोगों का ज़िक्र करती है जिन्होंने अल्लाह के दुश्मनों से दोस्ती की — 'वो न तुम में से हैं न उन में से, और वो जान-बूझ कर झूटी क़समें खाते हैं।' और उनका बयान: '**इस्तह्वज़ 'अलैहिमुश्-शैतानु फ़-अन्साहुम ज़िक्रल्लाह** — शैतान उन पर ग़ालिब आ गया, तो उसने उन्हें अल्लाह की **याद भुला** दी। **उलाइक हिज़्बुश्-शैतान** — यही शैतान की जमाअत है। सुनो! शैतान की जमाअत ही **ख़सारे** में है।'

और फिर, बेटा, वो एलान जो हर मायूस दिल के लिए है: '**कतबल्लाहु ल-अग़्लिबन्न अना व रुसुली** — अल्लाह ने **लिख दिया** है: **मैं और मेरे रसूल ज़रूर ग़ालिब रहेंगे।** इन्नल्लाह क़विय्युन 'अज़ीज़ — बेशक अल्लाह ताक़तवर, ग़ालिब है।'

'कतब' — लिख दिया गया, फ़ैसला हो चुका, दर्ज हो चुका। **ये कोई पेश-गोई नहीं जिसका इंतिज़ार हो; ये एक रिकॉर्ड है जो पहले ही मुकम्मल किया जा चुका।** और जब मैदान उल्टा लगे, बेटा, तो याद रखिए: ग़लबे का वादा हर दिन के लिए नहीं, **अंजाम** के लिए है।

और फिर सूरह की आख़िरी आयत — और ये पूरे क़ुरआन की सबसे संजीदा आयतों में से है: 'तुम ऐसी क़ौम न पाओगे जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हो और उन लोगों से **मोहब्बत** करती हो जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की — चाहे वो उनके **बाप** हों, या उनके **बेटे**, या उनके **भाई**, या उनका **ख़ानदान**।'

और उनका अज्र: '**उलाइक कतब फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-ईमान** — यही वो हैं जिनके **दिलों में** अल्लाह ने **ईमान लिख दिया** — **व अय्यदहुम बि-रूहिम्-मिन्ह** — और उन्हें अपनी तरफ़ से एक **रूह** से ताईद दी।' सोचिए, बेटा: ईमान सिर्फ़ ज़ुबान पर नहीं — **लिखा हुआ**, दिल की दीवार पर उकेरा हुआ।

और फिर वो जुमला जिस पर सूरह बंद होती है: 'अल्लाह उन से राज़ी हुआ और वो

अल्लाह से राज़ी हुए। **उलाइक हिज़्बुल्लाह** — **यही अल्लाह की जमाअत है।** **अला इन्न हिज़्बल्लाहि हुमुल्-मुफ़्लिहून** — सुनो! **अल्लाह की जमाअत ही कामयाब है।**'

बेटा, देखिए ये सूरह कहाँ से शुरू हुई और कहाँ ख़त्म हुई: **एक अकेली, बूढ़ी, बे-सहारा औरत से जिसे कोई नहीं सुन रहा था — और आख़िर में 'अल्लाह की जमाअत' के एलान पर।** क्योंकि अल्लाह की जमाअत तादाद से नहीं बनती; वो उन दिलों से बनती है जिन्होंने अपनी फ़रियाद ऊपर मोड़ दी और अपनी वफ़ादारी सिर्फ़ उसी के लिए ख़ालिस कर ली।

इस सूरह से क्या सीखा

1. जब कोई आपकी न सुने, तो अपनी फ़रियाद **ऊपर** मोड़ दीजिए — 'व तश्तकी इलल्लाह'; अर्श ने कभी कोई आवाज़ नहीं छोड़ी।

2. ग़ुस्से की ज़ुबान का हिसाब उसका मालिक देता है — अल्लाह ग़ुस्से पर टैक्स लगाते हैं और उसे रहमत पर ख़र्च करते हैं।

3. हर मजलिस में एक ग़ैर-दर्ज हाज़िर है — तीन का चौथा, पाँच का छटा।

4. राज़ भी अख़्लाक़ वाले हों: सरगोशी बिर्र और तक़्वा में हो, और दो कभी तीसरे को छोड़ कर सरगोशी न करें।

5. लोगों के लिए जगह बनाइए — अल्लाह आपके लिए जगह बनाएँगे।

6. ईमान और इल्म दोनों साथ हों तो अल्लाह ख़ुद दर्जे बुलंद करते हैं — और जिसे वो उठाएँ उसे कोई गिरा नहीं सकता।

7. ग़लबे का वादा 'लिख दिया' गया है — हर दिन के लिए नहीं, अंजाम के लिए; और अल्लाह की जमाअत तादाद से नहीं, ख़ालिस वफ़ादारी से बनती है।

या समी', या बसीर — हमारी हर पोशीदा फ़रियाद सुन लीजिए, हमारे दिलों पर ईमान लिख दीजिए, और हमें अपनी जमाअत में शामिल फ़रमाइए। आमीन।